## 21वीं सदी..

# समकालीन कहावतें

## (भाग - 1)

इस पुस्तक को लेखक की सहमति के बाद सामग्री को त्रुटि मुक्त बनाने के लिए किए गए सभी उचित प्रयासों के साथ प्रकाशित किया गया है।

इस पुस्तक प्रकाशन के किसी भी हिस्से या अंश का प्रतिलिपिकरण या ऐसे यंत्र से भंडारण जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानान्तरण, किसी भी रूप में या किसी विधि से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, मैनुअल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्यथा, किसी भी माध्यम से पुन: प्रस्तुत, पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या प्रेषित तथा किसी और ढंग से, संपादक, लेखक की पूर्व अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

**© कॉपीराइट : अनिल अग्रवाल**

**संस्करण: पहला**

**ISBN : 978-93-49791-17-6**

**मूल्य : 250/-**

**पुस्तक प्रकार : कहावतें**

**प्रकाशन वर्ष 2025**

Call or Whatsapp @ 7587814929 or

Mail @ publish@sahityagram.com

Website: - www.sahityagram.com

Bilaspur, Chhattisgarh, 495001

**भारत में मुद्रित**

# 21वीं सदी..

# समकालीन कहावतें

## (भाग - 1)

अनिल अग्रवाल

# प्राक्कथन

## क्या 21वीं सदी विडम्बनाओं की सदी है?

- असत्य पर जितना बलपूर्वक व जितने अधिक समय तक टिका रहा जायेगा, वह उतनी ही क्षमता के साथ सत्य में परिवर्तित होता जायेगा।
- अज्ञानी चतुराई से अपने अज्ञान को ओढ़ रहा है और ज्ञानी के रूप में अवतरित हो रहा है।
- उपभोगवाद 21वीं सदी का मर्म बन चुका है।
- लोगबाग़ अपने जीवन को अपनी मुट्ठी में इस कदर भींचे हुए हैं, जिससे वह सरक न जाये।
- इस कालखंड का प्रत्येक व्यक्ति अपने घृणा, ईर्ष्या व वैमनस्य का जुनूनी बन गया है।
- आज हर व्यक्ति अपनी दहलीज लांघने पर आमादा है।
- वर्तमान में लोगों की लोगों से अपेक्षायें आसमान छू रही हैं।
- यह सदी जल्दबाजों की है, जबकि छोटे-छोटे कदम ही प्रगति के आधार हैं।
- आज हर व्यक्ति प्रतिपल सस्ते व आसान विकल्पों की ओर भाग रहा है।
- लोग सही उत्तर पाने की हड़बड़ी में प्रश्न ही गलत पूछ रहे हैं।
- इस सदी के लोग अपनों से ज्यादा पशुओं के आसक्त-धर्मी हो गये हैं।

## संभावनाओं की सदी के रूप में 21वीं सदी कैसे अवतरित हो?

- फिसलने से न डरें, क्योंकि पूर्णता प्राप्ति मिथक है।
- युद्ध रोकने के लिए ईश्वर के समक्ष नतमस्तक न हों बल्कि नेतृत्व के समक्ष सिर नवाजें।
- सामूहिक रूप से बेलगाम होती वैज्ञानिक प्रगति पर अंकुश लगाने का प्रयास करें।
- ह्रास हो रही इच्छाशक्ति को योग, जागरुकता व ईश्वर में विश्वास से मजबूती प्रदान करें।
- अपने जीवन उद्देश्यों को सुसंगति प्रदान करें।
- यथासंभव कीमत चुका कर शान्ति का क्रय करें।
- आप एक शून्य अपेक्षाओं वाले व्यक्तित्व की ओर अग्रसर हों।
- आशा, विश्वास और प्रेम का अपने भीतर अंशत्व प्रदान करें।
- नीर की तरह सरल बनने का प्रयत्न करें।
- लचीले एवं झुकावदार व्यक्तित्व के धनी बनें।

# अनुक्रमणिका


| क्र. | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|
| 1. | हमारा युग | 01 |
| 2. | जीवन | 25 |
| 3. | परिवर्तन | 76 |
| 4. | नेतृत्व | 90 |
| 5. | पुरुष | 98 |
| 6. | स्त्री | 147 |
| 7. | परिवार | 156 |
| 8. | शिक्षा | 168 |
| 9. | भूमंडलीकरण | 181 |
| 10. | इतिहास | 187 |

# हमारा युग

# हमारा युग

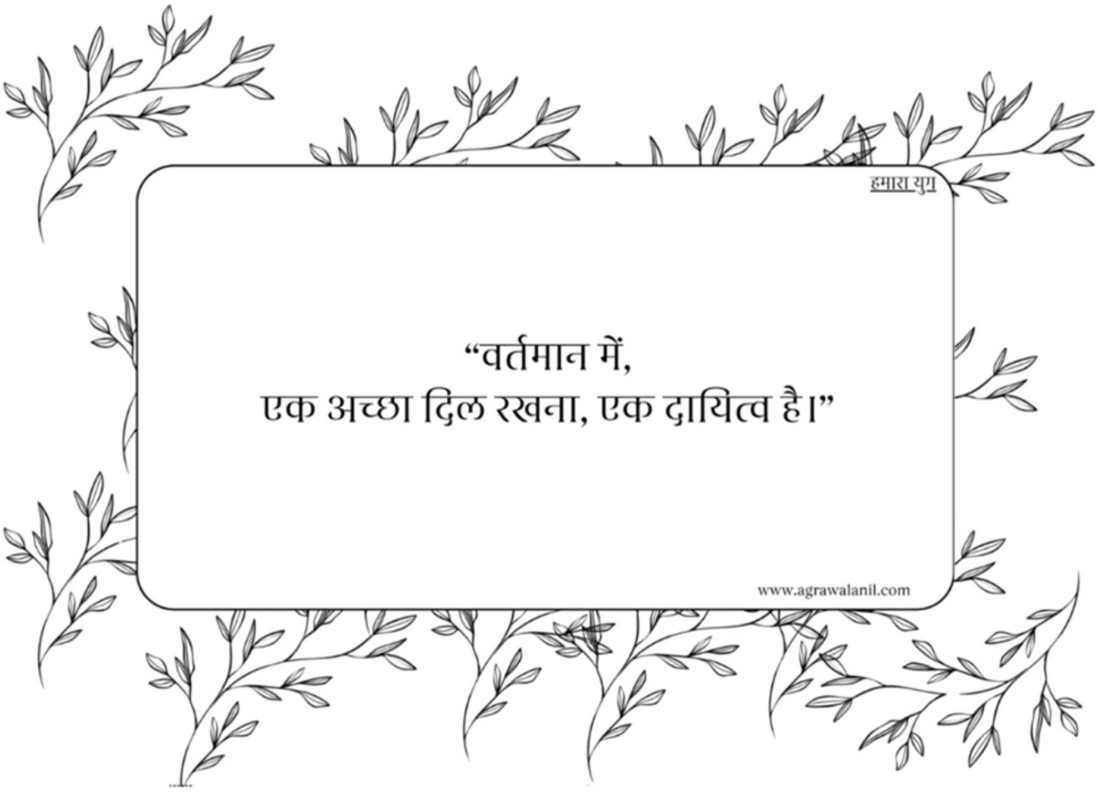

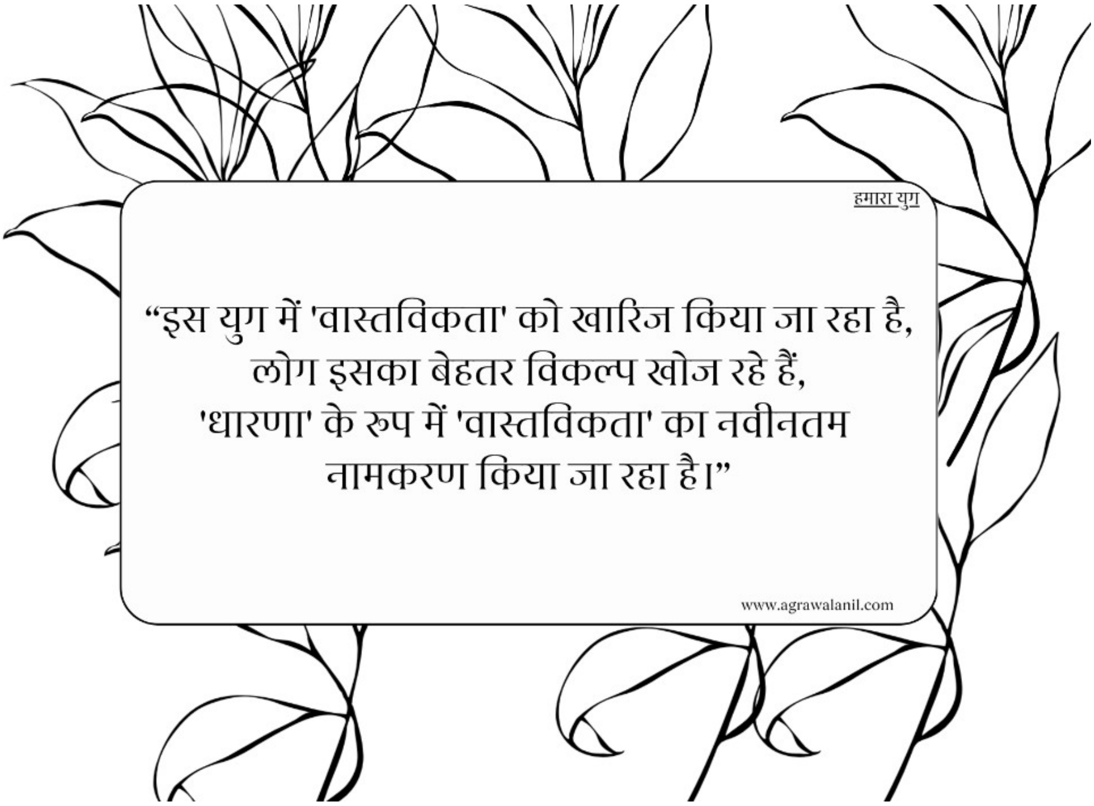
हमारा युग
“इस युग में 'वास्तविकता' को खारिज किया जा रहा है,
लोग इसका बेहतर विकल्प खोज रहे हैं,
'धारणा' के रूप में 'वास्तविकता' का नवीनतम
नामकरण किया जा रहा है।”
www.agrawalanil.com

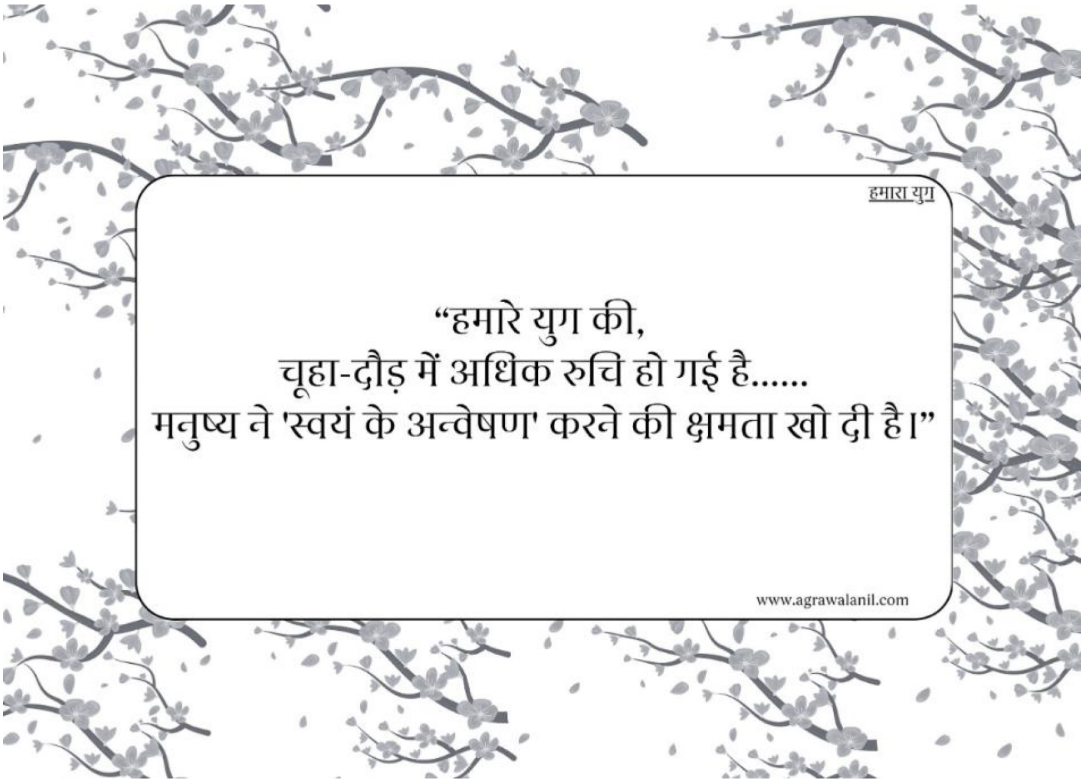
हमारा युग
“हमारे युग की,
चूहा-दौड़ में अधिक रुचि हो गई है......
मनुष्य ने 'स्वयं के अन्वेषण' करने की क्षमता खो दी है।”
www.agrawalanil.com